महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
Accredited with 'A' Grade by NAAC

हिंदी विश्वविद्यालय में कथाकार, आलोचक विजय मोहन सिंह को श्रद्धांजलि

वर्धा दि. 25 मार्च 2015: हिंदी के प्रख्यात कथाकार और वरिष्ठ आलोचक विजय मोहन सिंह का अचानक हृदयगति रुकने से दिल्ली स्थित उनके आवास पर आज सुबह निधन हो गया। उनके निधन पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में शोकसभा में श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। विजय मोहन सिंह विश्वविद्यालय में वर्ष 2012-13 के दौरान आवासीय लेखक के रूप में पदस्थ थे।

शोक सभा में आवासीय लेखक मदन सोनी, कुलानुशासक प्रो. सूरज पालीवाल तथा बहुवचन के संपादक अशोक मिश्र ने विजय मोहन सिंह के साहित्यिक कृतियों पर प्रकाश ड़ाला।

विजय मोहन सिंह लंबे अरसे से अस्वस्थ चल रहे थे। यह दुखद समाचार मिलते ही हिंदी जगत में शोक की लहर व्याप्त हो गई। इस अवसर पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रशासनिक भवन में कुलसचिव एवं वित्ताधिकारी संजय भास्कर गवई की अध्यक्षता में एक शोक सभा का आयोजन सायं 5-30 बजे किया गया। विजय मोहन सिंह का परिचय देते हुए विश्वविद्यालय की पत्रिका बहुवचन के संपादक अशोक मिश्र ने कहा कि उनका जन्म बिहार के आरा जिला स्थित शाहाबाद के एक

जमींदार परिवार में 1 जनवरी 1936 को हुआ था। जीवन के प्रारंभिक बरसों में उन्होंने आरा के एक डिग्री कालेज में अध्यापन किया जिसके बाद दिल्ली और हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर रहे। वे तीन बरसों तक हिंदी अकादमी दिल्ली के सचिव भी रहे और अकादमी की पत्रिका इंदप्रस्थ भारती का संपादन भी किया। उनके तीन कहानी संग्रह टटटू सवार, एक बंगला बने न्यारा, गमे हस्ती का हो किससे और एक उपन्यास कोई वीरानी सी वीरानी है प्रकाशित हुए। इसके अलावा उनकी हिंदी आलोचना को एक नई दृष्टि देने वाली छह पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनको कथा आलोचना में मील का पत्थर कहा जा सकता है। हिंदी आलोचना को अपने लेखन से जिन आलोचकों ने नई दिशा और दशा दी उसमें विजय मोहन सिंह का नाम सर्वोपरि है। विजय मोहन सिंह ने आलोचना के तयशुदा मानकों को पूरी तरह अस्वीकारते हुए बहुत ही तटस्थ ढंग से कृतियों का मूल्यांकन किया। उन्होंने आलोचना की पद्धति खुद विकसित की और बेबाकी के साथ लिखा। ऐसे में कई अति चर्चित कृतियों को उन्होंने अस्वीकारते हुए उपेक्षित कृतियों से हिंदी जगत को परिचित कराया। शोक सभा में दो मीनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।